शिव गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई–पत्रिका

अंक-11 : माह-नवंबर 2023

–: आशीर्वाद :–

प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट

सद्गुरु-संदेश

व्यावहारिक सीख

'शिव गरिमा' पत्रिका में संदेश के रूप में हर महीने कुछ न कुछ बात जो मेरे मन में होती है उसे सभी साधकों से साझा करती रहती हूं। इस बार मैं कुछ व्यावहारिक बातें हैं जो सभ्यता, संस्कृति, मान्यता व पारंपरिक आधारों पर निर्भर हैं उसे साधकों के लिए बता रही हूं।

जब भी कोई घर से बाहर कहीं जाने को अपनी गाड़ी से या रेल, बस, हवाई जहाज आदि सार्वजनिक साधनों से निकलें तो उसे चाहिए कि निकलने से पहले घर में गणेश जी की प्रतिमा या चित्र के आगे घी का दीपक जलाकर उन्हें गुड़-नारियल या केवल गुड़ का ही नैवेद्य दिखाकर व नमन करके निकलें।

कुछ बातें और हैं कि स्नान करते समय किसी को भी, कभी भी पूरे कपड़े उतार कर नहीं नहाना चाहिए। इससे धरती मां का अपमान होता है। पहले के जमाने में स्नानघर नहीं होते थे तो महिलाएं कपड़े पहने हुए ही स्नान करती थीं। अभी भी मासिक धर्म के बाद चौथे दिन कपड़ों सहित मौन रहते हुए स्नान करना अच्छी बात है। दूसरे कपड़े धारण करने के बाद ही मौन तोड़ना चाहिए। नहाने के बाद बाल्टी में जो पानी रहता है उसे कभी पूरा खाली न

करें और ना उसे खाली करके औंधा रखें। जीवित व्यक्तियों के स्नान के बाद ऐसा करना दोषपूर्ण होता है। यह मृतकों के स्नान के समय करने का कार्य है।

पुराने जमाने में घरों में धान कूटने या अन्य कार्य के लिए ओंखली होती थी। यदि वो अभी भी हो तो उस पर कभी नहीं बैठना चाहिए। घर की दहलीज पर भी नहीं बैठना चाहिए क्योंकि इनकी हम हल्दी, कुमकुम लगाकर पूजा करते हैं अतः ऐसी पूजनीय वस्तुओं या स्थानों पर बैठना वर्जित है।

पुरुषों व खासकर युवाओं को कभी भी दाढ़ी व नाखून नहीं बढ़ाने चाहिए। हालांकि आजकल दाढ़ी बढ़ाने की फैशन सी चल रही है पर यह हमारी सभ्यता और मान्यता को भुलाने जैसा है। इससे बचें। महिलाओं को कभी भी सिर के बाल खुले नहीं रखने चाहिए। बाल बंधे रहे वरना भोजन में बाल आने की संभावना रहती है व दोष

भी लगता है। पहले महिलाएं जूड़ा बनाती, चोटी बनाती या रिबन से गूंथती थी तो यह खतरा लगभग नहीं रहता था। बालों को बिखेर कर संन्यासी की तरह रखना महिलाओं को शोभा नहीं देता।

भोजन के समय मितभाषी रहें या संभव हो तो मौन रहें। मन ही मन गोविंदम् गोविंदम् का उच्चारण करते हुए भोजन करें। कभी शिवजी के दर्शन के लिए मंदिर या किसी भी स्थान पर जाएं तो दहलीज पर नमन करके श्री राम, श्री राम का उच्चारण करना चाहिए इससे शिवजी बहुत प्रसन्न रहते हैं।

आपस में सबसे मीठा बोलें। प्यार से बोलें। सम्मान से बोलें और अपनेपन से बोलें। इससे बोलने वाले और सुनने वाले दोनों के मन को खुशी मिलती है।

दीपावली पर्व प्रसन्नता का पर्व है। हर एक को घर की जगमगाहट के साथ खुद के हृदय में भी रोशनी जलाते हुए हर्षोल्लास से दीवाली मनानी चाहिए। रोशनी बाहर भी रहे और भीतर भी।

ये कुछ छोटी-छोटी बातें हैं पर इनसे मिलकर किसी साधक का व्यक्तित्व बनता है। ऐसे भाव बने रहते हैं कि परंपरा का भी निर्वाह होता है और शालीनता भी बनी रहती है। सब अपने-अपने घर में स्वयं दीप-प्रकाश बनकर जगर-मगर करें व सबको खुशियां बांटें। ऐसी शुभकामनाएं।

आपकी अपनी प्रभु बा

एक आत्मीय आग्रह

स्वामी हृदयानंद

आदरणीय साधक परिवार,

गुरुदेव के अनंत आशीर्वाद व जय श्री कृष्ण। आपको जानकारी है कि इस वर्ष के प्रारंभ में जनवरी 2023 से 'शिव-गरिमा' ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रही है। इसमें अपनी गुरु-परंपरा, अपने आश्रम की व्यवस्थाओं, साधन की गहनता व अन्य अनेक ऐसे ही विषयों पर हर बार नए प्रसंग लेकर जानकारी, अनुभव व गूढ़ बातें समाहित की जाती है। आप में से अनेक साधक इसे पढ़ भी रहे हैं और सुविधा के लिए ओडियो वर्जन भी आता है तो सुन भी रहे हैं।

वस्तुतः इस पत्रिका का उद्देश्य ही हमारे साधन मार्ग व वासुदेव कुटुंब की आधार हमारी सद्गुरु परंपरा को हरेक हृदय तक पहुंचाना है। इसलिए इसमें हमारे गुरुदेव राजयोगी प्रभु बा का संदेश, पाथेय-प्रसाद के रूप में उनका अनुभव, प्रेरित करने वाला संपादकीय (सहज अभिव्यक्ति), साधन के मार्ग पर विशद् जानकारी के लिए साधन-संपदा, व्यवस्था व अन्य बातों के लिए सांकेतिक बात, गुरु महिमा पर विविध गुरुभक्तों की मन की बात (गहरी डुबकी), किसी विषय पर खुलासे के लिए या ज्ञान के लिए जिज्ञासा समाधान, ऊंची उड़ान के अंतर्गत साधकों के ध्यान के व अन्य अनुभव तथा साधकों को संबंधित अंक कैसा लगा इसका स्तंभ बात कहां तक पहुंची व गत माह के संपन्न कार्यक्रमों की सूची दी जाती है। यह सारा श्रम गुरुदेव इसलिए करवा रहे हैं ताकि हमें सहज ही सुगंध पथ के बारे में विस्तार से पता चलता रहे व चलने की गति बढ़े। इससे हमारा ज्ञान व ध्यान दोनों बढ़ते हैं। अतः इसका पठन व श्रवण हरेक साधक का स्वभाव बने।

सम्मतियां, जिज्ञासा समाधान और साधकों के अनुभव ये तीन स्थायी स्तंभ तो पूर्णतः साधकों के लिए ही हैं। यह हो सकता है कि अधिकतर साधक अपने अनुभव को, जिज्ञासा को या विचार को सटीक शब्दों में न लिख पाते हों, कोई दिक्कत नहीं है, जैसा भी आप लिख सकें लिखें। न हो तो अपनी आवाज में रिकार्ड करके ही भेज दें। भाषायी त्रुटियों का इतना महत्व नहीं है कि उसके बोझ से हम अपनी अभिव्यक्ति को ही त्याग दें। आप निःसंकोच लिखें, बोलें और भेजें। इसका आशय इतना ही है कि हरेक साधक हरेक साधक से प्रेरणा लेकर भी आगे बढ़ने का संकल्प ले।

सद्गुरु कृपा हम सब पर समान है तथा असीम है। यह निरंतर भी है तो फिर अपनी क्षमता को कम क्यों कर आंकना? जिन साधकों के पास केंद्र संचालक का दायित्व है वे भी स्वयं इस संबंध में सक्रिय हों एवं अपने केन्द्र से जुड़े साधकों को भी सजग करें। जो साधक शिव गरिमा ग्रुप से जुड़े हैं उनका भी विशेष उत्तरदायित्व है कि पत्रिका के उद्देश्य को सफल बनावें। एक बात और है कि यदि हम इस पत्रिका को पढ़ या सुन नहीं पा रहे हैं तो बहुत कुछ खो रहे हैं। यों भी इसे पढ़ने/सुनने में अधिकतम केवल आधा घंटा लग सकता है, एक माह में एक बार इतना समय देना कठिन नहीं है। यह आग्रह कोई कमी बताने या निष्क्रियता को इंगित करने के लिए नहीं होकर एक स्वस्थ भाव से विनती है। कृपया इसी अर्थ में लें। फिर से जय श्री कृष्ण।

नवरात्र महोत्सव उल्लासपूर्वक संपन्न हो गया। इस काल में हरेक साधक शक्ति पूजा करता ही है, उसका स्वरूप चाहे कुछ भी हो। शक्ति संचयन एक अनुष्ठान है। शक्ति का अर्जन जीवन में दैहिक, दैविक व भौतिक उन्नयन के लिए आवश्यक है। यह कार्य सानंद संपन्न हो चुका है। इसका दूसरा पक्ष होता है शक्ति का संरक्षण अर्थात् जो शक्ति प्राप्त हुई है वह बनी रहे इसके लिए उपाय। शक्ति को संग्रहित करना एक बात है और उसे निरंतर बनाए रखना दूसरी बात है। प्राप्ति भी यद्यपि कठिन है पर इतनी नहीं। इससे मुश्किल कार्य है शक्ति को जगाए रखना। इसके लिए नियमित साधन ही एकमात्र उपाय हो सकता है। जो साधक नित्य साधना करेगा वही सद्गुरु कृपा से प्राप्त शक्ति को टिकाए रख सकेगा। इन दोनों से भी अधिक महत्वपूर्ण बात है शक्ति का प्रयोग। शक्ति मिली, उसे सहेजा पर सबसे बड़ी बात है कि उसका उपयोग किसमें किया? गुरुदेव का मानना है कि शक्ति जब जागृत होती है तो उसका सदुपयोग ना हो तो यह आग से खेलने जैसा है। शक्ति एक लपलपाती लपट है यदि इसको उपयोग में नहीं लिया जाए तो वह साधक की क्षति भी कर सकती है। इसलिए लोक कल्याण में, आत्म कल्याण में तथा श्रद्धा-विश्वास को सुदृढ़ करने में शक्ति लगेगी तो उसका उपयोग भी होगा और सकारात्मक परिणाम भी आएंगे। यूं तो शक्ति संचयन, संरक्षण व सदुपयोग तीनों ही आयामों की धुरी सद्गुरु ही हैं परंतु साधक की अपनी तैयारी व पूर्व सोच हो तो परिस्थितियां अनुकूल बनने में समय नहीं लगता है।

भूतकाल में भी हम झांकते हैं तो पाते हैं कि अनेक साधकों ने शक्ति पाई थी। जो उनका उपयोग न करके दुरुपयोग करने लगे उनका नाश हुआ है तथा सदुपयोग करने वाले को सदा सफलता ने वरण किया है। शक्ति पर्व के बाद प्रकाश पर्व का आयोजन इसीप्रकार का प्रतीकात्मक कार्य है। हमारी शक्ति हमें तथा अन्यों को भी प्रकाशित करे, हर प्रकार की समृद्धि व सामर्थ्य दे तो ही हम सद्गुरु द्वारा बताए पथ के सच्चे पथिक बनने के अधिकारी कहलाएंगे।

सबको दीपोत्सव की शुभकामनाएं।

– स्वामी गुरुराजेश्वरानंद

साधन-संपदा

साप्ताहिकी का इतिहास

वासुदेव कुटुंब में साप्ताहिकी आयोजन का महत्व सर्वविदित है। हमारी परंपरा के सत्संग में गुरुदेव राजयोगी प्रभु जब भी आध्यात्मिक प्रवास पर रहते हैं या किसी आश्रम में निवास करते हैं तो यथासंभव वहां साप्ताहिकी सत्संग का आयोजन रहता है। यह सत्संग केवल सद्गुरु सन्निधि में ही हो सकता है। अनेक साधकों द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर तथा अनेक श्रद्धा समितियां द्वारा ऐसे साप्ताहिकी सत्संग होते रहते हैं। एक स्वाभाविक बात मन में उठती है कि इस विलक्षण सत्संग की पद्धति का शुभारंभ कब और कैसे हुआ होगा?

बात तब की है जब गुरुदेव राजयोगी प्रभु बा अपने गुरुबंधु श्री भगवंतराय जी पटवर्धन के द्वारा स्थापित पाठशाला व आश्रम, येऊर (ठाणे) में विराज रहे थे। यह

एक महत्वपूर्ण स्थान है जहां पर परमपूज्य योगिराज श्री गुलवणीजी महाराज भी दो बार प्रवास के दौरान निवास कर चुके थे। प्रभु बा के निवास के दौरान की एक घटना है। एक रात्रि को लगभग ब्रह्ममुहूर्त में सहसा एक प्रकाशपुंज गुरुदेव को दृष्टिगत हुआ। अवस्था जाग्रत जैसी ही थी। वह प्रकाशपुंज धीरे-धीरे एक वलय (घेरे) में परिवर्तित हो गया। उस घेरे में कुछ क्षणों बाद ही स्वामी महाराज यानी वासुदेवानंद सरस्वती टेंबे स्वामी का तेजस्वी मुखमंडल दृष्टिगत होने लगा। प्रभु बा को इससे कुछ घबराहट भी हुई क्योंकि टेंबे स्वामी महाराज के बारे में यह श्रुत जानकारी थी कि वे साधन मार्ग में बहुत कड़े अनुशासन के पक्षधर थे तथा उनका ठीक से परिपालन नहीं कर पाने वाले को वे कठोरता से चेताते रहते थे। गुरुदेव को लगा कि कोई त्रुटि तो नहीं हो गई? तभी स्वामी महाराज का गुरु गंभीर स्वर सुनाई दिया –''आप अब घर के बाहर निकलो।'' गुरुदेव यह समझ नहीं पाए। खुलासा करते हुए स्वामी महाराज ने कहा– 'धर्म व शक्तिपात के प्रचार के लिए प्रवास करो।' तब गुरुदेव के मन में आया कि ना तो मुझे धार्मिक ग्रंथों की

जानकारी है और ना ही प्रवचन कौशल है तो कैसे प्रचार होगा? तभी स्वामी महाराज बोल उठे कि 'सात-सात दिन का सत्संग करो।' गुरुदेव ने सात दिन की भागवत तथा ऐसे ही अन्य आयोजनों के बारे में सुना था पर सत्संग कैसे हो? फिर स्वामी महाराज का स्वर आया-'सात दिन अखंड नाम जप करो।' गुरुदेव के मन में फिर प्रश्न खड़ा हो गया कि नाम तो अनेक हैं, किसके नाम का जप? तब स्वामी महाराज बोले-''मेरा नाम मालूम नहीं क्या?'' इतना उद्‌बोधन देकर वे अंतर्धान हो गए।

संकेत मिल चुका था। आदेश हो चुका था। समझ में आ गया कि सात दिन, सात रात्रि अखंड नाम जप करना है तथा टेंबे स्वामी महाराज का नाम वासुदेवानंद सरस्वती है तो वासुदेव नाम का जप करना है। भक्ति क्षेत्र में 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय' यह द्वादशाक्षरी मंत्र बहुप्रचलित है तथा भक्ति का आधार रहा है। यह सोचकर अखंड नाम जप साप्ताहिकी का आगाज हुआ। ध्यान में गुरुदेव को यह भी निर्देश मिले कि इसी चातुर्मास काल में एक के बाद एक लगातार सात साप्ताहिकी सत्संग करने हैं और ये साप्ताहिकियां अपने घर में नहीं करके अन्यत्र करनी हैं।

अब एक नया दौर चालू हुआ। प्रश्न खड़ा हुआ कि ये सात साप्ताहिकियां कहां हो? कौन कराएगा? घर के बाहर कभी निकले नहीं तो आध्यात्मिक पहचान भी कहां है? कोई स्थापित आश्रम नहीं, कोई शिष्य समुदाय भी बड़ा नहीं तो कैसे यह सब होगा? पर मन में यह पक्का भरोसा था कि स्वामी महाराज का आदेश और अपने सद्गुरुदेव पूज्य गुलवणीजी महाराज का साथ है तो यह कार्य संपन्न होना ही है।

आज से लगभग 30 वर्ष पूर्व 5 अगस्त 1993 को पहली साप्ताहिकी से यह सिलसिला शुरू हुआ। सद्गुरु परंपरा के आदेश व आशीर्वाद से शुरुआती सात साप्ताहिकियों का वर्णन इस प्रकार है–

1. पहली साप्ताहिकी 5 अगस्त से 12 अगस्त 1993 येऊर–ठाणे के उसी आश्रम में हुई। यहीं पर गुरुदेव बिराजमान थे। यहीं पर साप्ताहिकी की रूपरेखा के संबंध में भी स्वामी महाराज के निर्देश मिले। उसके अनुसार 7 दिन 7 रात अखंड नाम जाप होगा। पूरी साप्ताहिकी के दौरान अखंड दीप प्रज्वलित रहेगा। शुरुआत में गणेश पूजन करके उन्हें गुड़–खोपरे का तथा देवी पूजा करके उन्हें ओटी एवं गुड़–चने का नेवैद्य अर्पित करना। सातों दिन प्रातः काल प्रभात फेरी करना एवं भिक्षा लेकर ही भोजन ग्रहण करना। साप्ताहिकी के दौरान गुरुचरित्र का पारायण करना। एक समय का उपवास व एक समय का भोजन करना।

2. दूसरी साप्ताहिकी 26 अगस्त से 2 सितंबर 1993 चंद्रपुर (महाराष्ट्र) में। यह साप्ताहिकी श्री बानोत जी के घर पर हुई। चंद्रपुर गुरुदेव का प्रवास पहले भी हुआ था क्योंकि वहां उनकी ननद का निवास था। कुछ परिचित लोग भी वहां पर थे।

3. तीसरी साप्ताहिकी 9 से 16 सितंबर 1993 तक सेंधवा (मध्य प्रदेश) में हुई। सेंधवा में शक्तिपात परंपरा के भिन्न-भिन्न सद्गुरुओं के शिष्यों का निवास था। अनेक लोग शक्तिपात परंपरा से परिचित भी थे। यहां पर श्री हरि भाई अग्रवाल और अन्य साधकों के सौजन्य से साप्ताहिकी हुई। श्री हरि भाई गुरुदेव के गुरुबंधु भी हैं। साप्ताहिकी का स्थान रूपाबाई अग्रवाल धर्मशाला में था। यहां अनेक संतों का पदार्पण होता रहता था इसलिए यहां के भक्त सत्संग प्रेमी थे। इस साप्ताहिकी के दौरान व्यवस्था भी अच्छी थी और भजन गाने वाले भी कई गायक अच्छे से जुड़ गए थे।

4. चौथी साप्ताहिकी 23 से 30 सितंबर 1993 को राजस्थान के उदयपुर जिले के मेनार गांव में हुई। यहां पर ग्रामवासियों द्वारा एक शिव मंदिर का निर्माण किया गया था और उसकी प्राण प्रतिष्ठा एवं कलश स्थापना बाकी थी। गांव के लोग उदयपुर के एक आध्यात्मिक व्यक्ति श्री रामनारायणजी जिन्हें टोपी वाले गुरु जी के नाम से सब जानते थे, उनके संपर्क में थे। ये गुरुजी हमारे गुरुदेव के संपर्क में थे। इन्होंने गांव वालों से कहा कि प्रतिष्ठा से पूर्व साप्ताहिकी का आयोजन करवाया जाए। ग्रामवासी खुश हो गए। गुरुदेव पधारे। यहां के लोगों ने गुरुदेव का बहुत भव्य

स्वागत किया एवं शिव मंदिर में ही साप्ताहिकी रखी। रात्रि काल में ग्रामवासी ही जप करते थे क्योंकि मंदिर गांव से थोड़ा बाहर था। गांव वालों के लिए इस प्रकार का सत्संग एक नई बात थी। गुरुदेव को यह आशंका रहती थी कि कहीं जप खंडित न हो जाए। पूर्णाहुति के समय गुरुदेव को गुरुवाणी में योगिराज गुलवणी जी महाराज ने आश्वस्त किया कि रात्रि काल में मैं स्वयं शिवलिंग के साथ बैठकर जप करता था। यह घटना सिद्ध करती है कि साप्ताहिकी निरंतर सदगुरु परंपरा के सान्निध्य में चलती है। यहां पर भी व्यवस्था संबंधी अनुकूलता ही रही।

5. पांचवी सप्ताहिक की 1 अक्टूबर से 8 अक्टूबर 1993 तक बेणेश्वर धाम में हुई। पूर्व में यह साप्ताहिकी सलूंबर में एक साधक के यहां पर होनी थी किंतु अपरिहार्य कारणों से यह संभव नहीं हो सका इसलिए तुरंत बेणेश्वर जाकर साप्ताहिकी करने का निर्णय लिया गया। इस स्थान पर ना तो कोई परिचित था और ना ही कोई पूर्व जानकारी थी। व्यवस्था का तो कोई प्रश्न ही नहीं था। साप्ताहिकी के लिए गुरुदेव साधकों के साथ जब बेणेश्वर पहुंचे तो रात हो चुकी थी। वहां पर ठहरने के लिए भी कोई स्थान नहीं मिला तो एक धर्मशाला की छत पर रात को रुके। इस साप्ताहिकी में सब प्रकार की असुविधाओं का सामना करना पड़ा। एक तरह से यह वासुदेव कुटुंब के साधकों के लिए एक पाठ था कि विपरीत परिस्थितियों में भी कैसे संकल्प को पूरा किया जा सकता है।

6. छठी साप्ताहिकी वर्तमान में जहां शिवपुरी आश्रम है उस स्थान पर हुई। तब निर्माण कार्य शुरू ही हुआ था और दत्त मंदिर एवं एक-दो कमरे ही थे। यहां पर रिश्तेदारों व परिचितों के कारण हर तरह की सुविधा उपलब्ध हो गई।

7. इस क्रम में सातवीं साप्ताहिकी मंडलेश्वर (मध्य प्रदेश) में 28 अक्टूबर से 4 नवंबर 1993 को हुई। जब चंद्रपुर की साप्ताहिकी थी तब वहां के एक परिचित जो नर्मदा दर्शन के लिए मंडलेश्वर आते रहते थे उन्होंने आग्रह किया था कि एक साप्ताहिकी वहां की जा सकती है। उनके माध्यम से स्थान भी मिल गया। नर्मदा जी के तट पर एक कुटिया थी वहीं पर गुरुदेव का निवास रहा। इस कुटिया में नर्मदा परिक्रमा के दौरान परमपूज्य टेंबे स्वामी महाराज भी 21 दिन के लिए बिराजे थे। यहां पर प्रतिदिन साधकों के साथ गुरुदेव नर्मदा स्नान को जाते थे। अनेक साधक यहां जुड़ चुके थे। एक दिन नर्मदा स्नान करते हुए जल में ही गुरुदेव को ध्यान लग गया था। उस घटना के साक्षी अनेक साधक आज भी स्वयं को धन्य मानते हैं।

इसके बाद तो साप्ताहिकियों की परंपरा ने गति ही पकड़ ली। अब तक सैकड़ों साप्ताहिकियां संपन्न हो चुकी हैं। व्यवस्थाएं, सुविधा तथा साधकों की संख्या समय के अनुसार बदलती, बढ़ती चली गईं किंतु इस अनुष्ठान का मूल आधार अब भी वही है जो स्वामी महाराज ने कहा था-धर्म का प्रचार और शक्ति मार्ग के द्वारा लोक कल्याण।

सौजन्य - स्वामी शिवानंद

प्रभु बा का अनुभव

पाथेय-प्रसाद

ध्यान धैर्य का साधन है

मेरी संकल्प दीक्षा परमपूज्य योगिराज गुलवणी जी महाराज से 7 जनवरी 1973 को हो गई थी। उसके बाद मैं नियमित ध्यान करती थी। दीक्षा से पहले भी मेरी धार्मिक वृत्ति थी परंतु दीक्षा के बाद तो ध्यान में अनुभवों की झड़ियां ही लगती चली गईं।

ऐसे ही एक बार मैं ध्यान में थी तो अनुभव आया कि मैं और भाऊ साहब (मेरे गृहस्थाश्रम में पति) दोनों गणेशपुरी गए। वहां पर नित्यानंद बाबा बिराजे हुए थे। डोरियों से बनी साधारण सी चारपाई पर वे बैठे हुए थे। उनके पास में केले के हत्थे रखे हुए थे। उन हत्थों में प्राकृतिक रूप से पके हुए केले थे। वे हर आगंतुक को अपने हाथ से केले का प्रसाद दे रहे थे। मैंने भी उनके दर्शन किए। वे न जाने क्यों मुझे देखकर जोर-जोर से हंसने लगे। मुझे यह बहुत अच्छा लगा।

उसके बाद मैं पैदल ही पहाड़ी से उतर कर नीचे आ गई। वहां नीचे देखा कि मुक्तानंद बाबा एक शिला पर बैठे हैं। मैंने उनसे कहा कि बाबा तो ऊपर बैठे हैं और आप यहां क्या कर रहे हो? प्रश्न अप्रत्याशित भी था और अनधिकृत भी पर वे सहजता से बोले-ऐसे ही बैठा हूं। मेरी उपस्थिति से उनकी साधना में व्यवधान न हो यह सोचकर मैं दूर बैठा हूं। फिर उन्हें भी प्रणाम करके मैं आगे बढ़ने लगी तो मुक्तानंद बाबा ने मुझे रोका और पूछा-आप कहां जा रही हो? मैंने विनम्रता से कहा कि जाना कहीं नहीं है

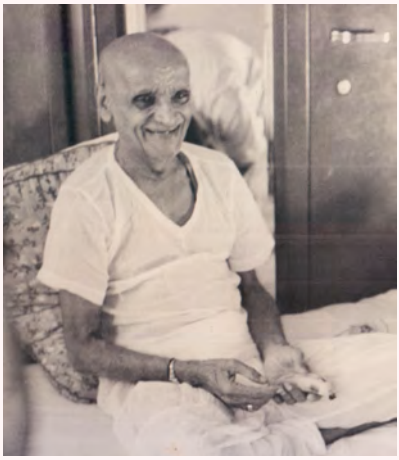

परंतु मेरे ध्यान का समय हो रहा है इसलिए जल्दी है। इसके बाद उन्होंने फिर पूछा कि आप किससे दीक्षित हो? मैंने उनसे कहा कि मेरे गुरुदेव परमपूज्य योगीराज गुलवणी जी महाराज पूना वाले हैं। यह यह जानकर बहुत खुश हुए और अत्यंत प्रसन्न होकर मेरी पीठ थपथपाई। मेरे उत्साह को तो मानो पंख लग गए थे।

कुछ दिनों बाद ऐसे ही दूसरी बार ध्यान में फिर गणेशपुरी गई। वहां नित्यानंद बाबा उस दिन खाट पर बैठकर कंबल बांट रहे थे। पास में ही कंबलों का ढेर लगा था। वे कोई भी वस्तु प्रसाद रूप में देते तो फेंक कर देते थे। अपने पास किसी को नहीं आने देते थे। उनका मानना था कि कोई भी उनके सामने हाथ ना पसारे और प्रसाद लेने वाले में कहीं से भी दयनीयता न जगे, ऐसा उनका उच्च भाव रहता था।

उस दिन मुक्तानंद बाबा नित्यानंद बाबा की परिक्रमा कर रहे थे। यह उनकी साधना का एक अंग सा था कि जब भी उन्हें अवसर मिल जाता तो वे अपने सद्गुरु की परिक्रमा करते रहते थे। नित्यानंद बाबा ने मुझे देखा तो फिर जोर-जोर से हंसने लगे। मैं दर्शन करके निकली तो इस बार भी मुक्तानंद बाबा ने मुझे रोका और पूछा कि ध्यान साधन कैसा चल रहा है? मैंने कहा अच्छा है परंतु कभी तो कुछ दिखाई देता है, कभी कुछ नहीं। वे हंसते हुए बोले-देखो इस स्थिति में आने में समय लगता है। यह धैर्य का काम है। यह साधना जल्दबाजी की नहीं है। कभी-कभी तो वर्षों लग जाते हैं पर हताश व निराश नहीं होना चाहिए। यह ध्यान-साधन पद्धति अंततः फलदायी ही होती है इसलिए अपना साधन करते रहना। ऐसा कहकर उन्होंने फिर मेरी पीठ थपथपाई और दूसरी तरफ निकल गये । इसी समय किसी ने आवाज लगाई तो मेरा ध्यान टूट गया।

गहरी-डुबकी

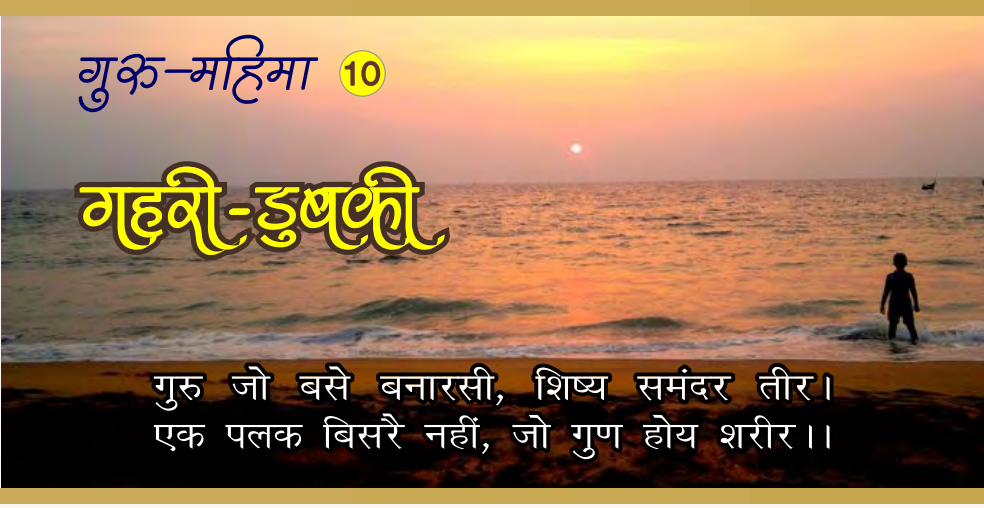

गुरु जो बसे बनारसी, शिष्य समंदर तीर।
एक पलक बिसरै नहीं, जो गुण होय शरीर।।

भावार्थ – गुरु भक्ति के बारे में कबीर साहेब का यह एक प्रसिद्ध दोहा है। इसका अर्थ है कि गुरु चाहे बनारस (काशी) में हो और शिष्य ठेठ समुद्र के किनारे पर हो। तब भी शिष्य अपने गुरु को एक पल भी विस्मृत ना करे तथा उनके गुणगान करे वही सच्चा शिष्य है।

यहां पर ध्यान देने की बात है कि गंगा काशी से चलते हुए गंगासागर तक जाती है और समुद्र में मिल जाती है। दोनों स्थान बहुत फासले पर हैं। भौतिक रूप से भले ही दूरी है पर गंगाजल चाहे वह काशी में बहे या गंगासागर में उसकी संरचना तो गंगाजल की ही है। दोनों अंतरंग रूप से जुड़े हुए हैं। ऐसे ही सद्गुरु व साधक भले ही साथ नहीं रह रहे हैं, पर्याप्त दूरी है पर उससे गुरु भक्ति व गुरु के प्रति भावों में क्या अंतर आएगा? एक पलक झपकने में जितना समय लगता है उतने काल तक भी शिष्य अपने गुरु का स्मरण न छोड़े तथा गुरु के प्रति अहोभाव व्यक्त करता रहे। सच्चे शिष्य को ना तो गुरु से दूरी से फर्क पड़ता है और ना ही अन्य बातों से। वह तो हरदम गुरु में ही समाया रहता है इसलिए भौगोलिक दूरी उसे प्रभावित नहीं कर सकती। आत्मिक सान्निध्य के आगे भौतिक भिन्नता कहां प्रभावी हो सकती है? सद्गुरु तो गुणों की खान है। एक शिष्य यदि गुरु के सद्गुणों, गुरु के प्रेम, गुरु की कृपा, गुरु की आशीष पर ही अपना ध्यान केंद्रित करेगा तो अन्य व्यर्थ की बातों पर उसका ध्यान जाएगा भी कैसे? इसलिए गुरु भक्ति या गुरु महिमा को जानने के लिए समर्पण तथा अंतरपट तक गुरु की उपस्थिति का एहसास ही सहायक हो सकता है।

सांकेतिक बात

अखंड नाम संकीर्तन - 12 घंटे के जप

साप्ताहिकी के अलावा गुरुदेव की अनुमति से किसी भी साधक के निवास या स्थानीय केंद्र पर अखंड नाम संकीर्तन यानी 12 घंटे के जप रखे जा सकते हैं। इस अवधि में द्वादशाक्षरी मंत्र 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय' का जप अखंड रूप से होता है। सामान्यतः यह समय प्रातः 6.00 से शाम 6.00 बजे तक रहता है विशेष परिस्थिति में आश्रम से अनुमति लेकर समय में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है। हरेक साधक को इस अखंड नाम संकीर्तन का लाभ अपने निवास या अपने द्वारा केंद्र पर आयोजित करके अवश्य लेना चाहिए। इसके लिए गुरुदेव का मानना है कि व्यय संबंधी विषय पर मितव्ययता बरती जाए। व्यवस्था पक्ष को भव्य बनाने के बजाय जप को दिव्य बनाने पर ज्यादा ध्यान अपेक्षित है।

जैसी घर के सदस्यों के लिए उपवास में नाश्ता व भोजन व्यवस्था करते हैं वैसी ही की जानी चाहिए। सायंकाल आरती के बाद उपस्थित साधकों के लिए महाप्रसाद भी सामान्य सा ही हो। एक मिठाई, पूड़ी या रोटी, चावल, दाल, सब्जी आदि पर्याप्त हैं। यह प्रसाद नेवैद्य में भी धराया जाता है इसलिए यदि दाल, सब्जी आदि में प्याज, लहसुन का प्रयोग ना हो तो अच्छा है। यदि संभव न हो तो नेवैद्य के लिए अलग से बना सकते हैं। महाप्रसाद, दिन का फलाहार व सुबह का नाश्ता पंगत लगाकर पूरी विधि से ही संपन्न हो।

जिस साधक के द्वारा 12 घंटे के जप का आयोजन है उनके लिए पूर्व तैयारी हेतु कुछ दिशा निर्देश हैं–

परंपरा की तस्वीर, अखंड ज्योति दीप, तस्वीरों पर पुष्पहार, माताजी व गणेश जी की मूर्ति या चित्र, माता जी के लिए ओटी, गणेश जी के लिए चना–खोपरा और माताजी के लिए चना व गुड़, धूप–अगरबत्ती, जल कलश पूजन के लिए हल्दी, कुमकुम, अक्षत, प्रातः बड़े गुरुदेव के लिए शर्करायुक्त दूध का नेवैद्य, दिन में उपवासी फलाहार का नेवैद्य, सायंकाल महाप्रसाद का नेवैद्य और दिन में एक कन्या का पूजन सादगी व श्रद्धापूर्वक हो।

जप प्रारम्भ होने से पूर्व ही गुरु परंपरा व अन्य चित्र या मूर्ति स्थापित करके उनका शृंगार, पूजा हो जाए। अखंड दीप का प्रज्वलन हो तथा आह्वान के साथ जप का प्रारंभ हो। आयोजन अपने घर पर कर रहे हों तब तो ठीक है, यदि केंद्र या आश्रम पर कर रहें हों तो समय से पूर्व अवश्य पहुंचे और एक दिन पूर्व वहां की व्यवस्था और स्वच्छता का भी जायजा ले लें। जहां तक संभव हो भोजन प्रसादी बनाने व जप के स्थान में कुछ दूरी अवश्य रहे ताकि व्यवधान न हो। बैठक के लिए पर्याप्त बिछात हो तथा सामान्य वाद्ययंत्रों की उपलब्धता हो। 12 घंटे के जप अखंड चले इसके लिए साधकों को समय का आवंटन एक दिन पहले ही करके सूचित करेंगे तो सुविधा रहेगी। आग्रह करें कि पूर्णाहुति में अधिकतम साधक उपस्थित रह सकें। जप की पूर्णाहुति के बाद आयोजक परिवार द्वारा आरती हो तथा आश्रम संबंधी कोई सूचना हो तो उसे प्रसारित करें। इसके बाद महाप्रसाद प्रारंभ करें। आरती में एकत्र राशि को केंद्र संचालक के पास जमा करा दें। ये कुछ सामान्य निर्देश हैं जिनका ध्यान रखने से 12 घंटे के जप आसानी से पूरे हो सकेंगे।

ध्यान ही मूल है

एक बार बिलासपुर में साप्ताहिकी थी। सभी साधक बैठे थे तभी धार्मिक यात्राओं संबंधी बातचीत चली। गुरुदेव राजयोगी प्रभु बा की इच्छा हुई कि हम भी तीर्थयात्रा के लिए चलें। एक साधक के भाई इलाहाबाद में रहते थे इसलिए पहले वहां जाने का कार्यक्रम बना। प्रवास करते हुए बड़े सवेरे ही इलाहाबाद पहुंच गए। तब सामान्यतः यह अघोषित सा नियम था कि गुरुदेव के चाय, नाश्ता लेने के बाद ही सब नाश्ता आदि लेते थे। लेकिन वहां जाते ही गुरुदेव को ध्यान लग गया। करीब 6 से 9 बजे तक ध्यान में रहे। इसके बाद चाय लेकर बाकी दैनिक चर्या प्रारंभ हुई। करीब 11 बजे जब स्नान आदि चल रहा था और गुरुदेव कक्ष में थे तभी एक सज्जन वहां पर आए। उन सज्जन की कद-काठी इतनी आकर्षक थी कि उन्हें देखते ही रह जाएं। उनका प्रवेश सब के मन को खुश कर गया। गुरुदेव के साथ रहने वाले साधक बैठे हुए मराठी भाषा में बात कर रहे थे तो वे भी मराठी भाषा में ही बोलने लगे। सर्वप्रथम उन्होंने अपना परिचय दिया- मैं गजानन पित्रे, योगिराज गुलवणी जी महाराज से दीक्षित साधक हूं। अब तो सबको लगा कि यह तो अपने ही परिवार के सदस्य हैं। बातचीत में ही उन्होंने गुरुदेव प्रभु बा का फोटो निकाला और कहा- इनसे प्रत्यक्ष कब मिलना होगा? मिलना तो प्रत्यक्ष ही होता है यह सोचकर उन्हें कहा कि गुरुदेव को खबर करते हैं। सबकी जिज्ञासा थी कि इन्हें कैसे पता चला कि गुरुदेव इलाहाबाद आए हैं और इससे भी अधिक आश्चर्य की बात

तो यह थी की गुरुदेव का फोटो उनके पास कैसे आया? ना तो किसी ने भेजा था और ना हीं यह सज्जन पूर्व परिचित ही थे। उनके उत्तर ने सबको हतप्रभ करते हुए सद्गुरु सामर्थ्य का परिचय करा दिया। वे बोले – यह फोटो स्वयं प्रभु बा ने ही दिया है और वह पिछले तीन घंटे वे मेरे साथ ही थे। उन्होंने ही यहां का पता भी बताया है। जब गुरुदेव को कक्ष में जाकर सारा वृत्तांत बताया तो वे बस मुसकुरा दिए। कुछ ही देर में गुरुदेव बाहर आए तब दोनों की आत्मीय भेंट अद्भुत थी। प्रत्यक्ष भेंट का अर्थ भी सबको समझ में आ गया। गुरुदेव को बड़े गुरुदेव यानी योगिराज गुलवणी जी महाराज का प्रत्यक्ष सान्निध्य एक बार ही मिल पाया था इसलिए जो भी साधक उनके साथ जुड़ा रहा उससे बड़े गुरुदेव के बारे में बातें जानकर स्वाभाविक आनंद होता है। इस मुलाकात में भी गुरुदेव ने पित्रैजी से यही प्रश्न किया। पित्रैजी अपनी जीवनी का अंश बताने लगे जिसे सुनकर सद्गुरु परंपरा की महानता और एक साधक के लिए सद्गुरु क्या-क्या करता है, इसका एहसास हो गया। वह कहने लगे कि मैं इलाहाबाद का ही निवासी हूं। मुझ पर तीन बहनों और मां का दायित्व है। उनके पालन-पोषण के लिए मैं नाटकों में अभिनय करता था इससे होने वाली आय से ही गुजर-बसर होता था। अभिनय मेरी रुचि भी था और रोजगार भी। इसके अलावा मैं 'हैवीवेट चैंपियन' भी रहा। शारीरिक दृष्टि से ईश्वरीय कृपा रही तो मैं राष्ट्रीय स्तर पर इस विधा में अपनी पहचान बना पाया। एक किसी आयोजन में शारीरिक गठन व अभिनय कौशल पर उस समय के प्रसिद्ध फिल्मकार व्ही. शांताराम की नजर मुझ पर पड़ी तो उन्होंने मुझे मुंबई बुला लिया।

उस समय सिनेमा में काम करना मेरा बड़ा सपना था। मैं तुरंत उनके मुंबई स्थित राजकमल स्टूडियो चला गया। मेरा स्क्रीन टेस्ट हुआ संवाद कौशल देखा गया तो तत्काल उन्होंने एक फिल्म के लिए साइन कर लिया। मेरे जीवन का सबसे सुनहरा सपना साकार हो उठा। शूटिंग चालू हो गई। मेरे लिए भिन्न-भिन्न व कीमती कपड़े बनवाए गए। उस समय मैं अपने एक साथी के साथ एक घर किराए लेकर रहने लगा। मेरा वह साथी योगिराज गुलवणी जी महाराज का शिष्य था। मुझे कभी-कभी चर्चा करता था पर मैं तो निपट नास्तिक था, मुझ पर क्या असर होता? उल्टा मैं कुछ न कुछ ऊल-जलूल कह देता था।

उन दिनों स्टूडियो में साप्ताहिक अवकाश रहता था। एक बार ऐसा संयोग आया कि तीन दिन की छुट्टी थी। मेरा साथी पुणे का था तथा ऐसी छुट्टियों में वहां जाता रहता था। इस बार उसने मुझे भी आग्रह किया तो मैं साथ चला गया। वहां उसके घर रुके। उसने कहा कि अभी वासुदेव निवास में गुरु पूर्णिमा का उत्सव है तुम भी चलो ना। मैं अकेला घर पर रहकर क्या करूंगा यह सोचकर साथ चल दिया। मेरे पास शूटिंग के लिए बनवाए गए अच्छे सूट थे उनमें से एक पहना और वासुदेव निवास पहुंच गए। वहां कार्यक्रम चल रहा था। मेरा व्यक्तित्व उन कपड़ों से और निखर गया था तो हर कोई मुझे देख रहा था। मैं हॉल में ठेठ पीछे जाकर बैठ गया। वहां जो हो रहा था वह देखने लगा।

जैसे ही दर्शन प्रारंभ होने की सूचना हुई तो महाराज ने आवाज लगाई गजानन पित्रै तुम यहां आगे आ जाओ। मेरे आश्चर्य का ठिकाना ना रहा कि ये मेरा नाम कैसे जानते हैं? हो सकता है कि मेरे साथी ने पहले बता दिया हो यह सोचकर मैं आगे गया और जैसे सब दर्शन कर रहे थे मैंने भी कर लिए। कुछ ही देर बाद महाराज ने मुझे इंगित करते हुए कहा- गजानन पित्रै मैं तुम्हें दीक्षा देने वाला हूं। यह सुनकर हॉल में उपस्थित सभी लोग बधाई देने लगे। महाराज जी ने ऐसा किसी से कभी कहा नहीं था। मैं ऊहापोह में था कि हां कहूं या ना? हां कहूं तो मेरी अपनी मान्यता ध्वस्त होती है और ना कहूं तो इतने लोग क्या सोचेंगे। तब भी मुझमें इस कृपा का कोई स्पंदन न था। हालांकि मैंने इसी असमंजस में हां कह दिया। महाराज बोले- कल सुबह 5.45 बजे मैं तुम्हारे साथी के घर आऊंगा वहीं तुम्हें दीक्षा दूंगा। और ना कुछ पूछा ना जाना और सीधा आदेश हो गया।

खैर, दूसरे दिन सुबह मेरे साथी ने उठाया तो मैं नहा कर सही समय पर तैयार था। महाराज भी ठीक समय पर पधार गए। उन्होंने अपने समक्ष बैठा कर मेरे आज्ञा चक्र पर अपना अंगूठा रखा और मुझे न जाने कैसा रोमांच हो उठा। फिर क्या हुआ मुझे पता नहीं पर जब 3 घंटे बाद मेरी आंख खुली तो देखा कि महाराज वैसे ही सामने बैठे हुए हैं। मेरा शरीर व सिर भारी सा हो गया था। महाराज

जी के प्रति श्रद्धाभाव पूर्ण रूप से जग गया था। मैं उठकर उनको प्रणाम करना चाहता था पर उठा ही नहीं जा रहा था। महाराज जी ने इस स्थिति को देखकर अपने हाथ की अनामिका अंगुली को मेरे शरीर से लगाया और मुझे उठा लिया। कहां तो मैं हैवीवेट चैंपियन और कहां महाराज जी का शरीर? बस एक अनामिका से पूरा उठा दिया। मेरा तो अभिमान ही चूर-चूर हो गया। मैं तो शरणागत था। फिर उन्होंने मेरे परिवार व वर्तमान कार्य के बारे में पूछा। मैंने गर्व से सिनेमा में काम करने का जिक्र किया। महाराज बोले- मेरी बात मानो तो फिल्म इंडस्ट्री तत्काल छोड़ दो। मेरे लिए यह वज्रपात जैसा था। एक तो मेरा सपना पूरा हो रहा था, दूसरे प्रसिद्धि व पैसा दोनों सामने थे। मुझे पैसों की आवश्यकता भी थी। ऐसी दशा में यह कैसा आदेश? संशय नहीं था पर मैंने पूछा कि फिर परिवार का क्या होगा? महाराज जी बोले उसकी चिंता छोड़ो। तुम इलाहाबाद चले जाओ। तुम्हें रोजगार के लिए घर की दहलीज भी नहीं लांघनी होगी। सब ठीक होगा। तुम तो रोज 2 घंटे ध्यान करना। एक ही मंत्र है 'शांत बैठो, आंखें बंद करो और अंदर देखो।' तुम्हारा नामकरण भी आज से प्रयागराज है। महाराज के आदेश के बाद मैं सब छोड़कर

इलाहाबाद लौट गया। घर में जरूरतें थी, घर के लोग आशंकित थे पर मुझे सद्गुरु पर पूरा विश्वास था।

मैंने अब तक कभी धर्म ग्रंथों व अन्य कर्मकांड के बारे में अध्ययन नहीं किया था। नास्तिक जैसा था तो उनकी और आकर्षित भी नहीं था। एक दिन ध्यान के बाद सद्गुरु कृपा से सहसा मेरे मुख से संस्कृत के सूक्त और श्लोक निकलने लगे। यह बात बिजली की भांति इलाहाबाद शहर में फैल गई। गुरुकृपा से लोगों का आना प्रारंभ हुआ। मैं भी पूजा, अनुष्ठान करते हुए समाधान बताने लगा। कुछ ही दिनों में बहुत प्रसिद्धि हो गई। फिर तो ध्यान करते हुए वेद, उपनिषद, पुराण व अन्य शास्त्र भी सूझने लगे। बिना किसी अध्ययन व प्रयास के सद्गुरुकृपा से सब होता गया। संपूर्ण क्षेत्र में मेरा वेदज्ञ व आचार्य के रूप में नाम हो गया। लोगों का आवागमन खूब बढ़ा और पारिवारिक समृद्धि भी हो गई। इस बीच पुणे आश्रम भी आना-जाना रहा। जब भी जाता महाराज अपने पास ही बिठाते थे।

इतना कहकर पित्रैजी ने सभी साधकों को कहा कि आप कितने भाग्यशाली हैं कि आप महाराज जी द्वारा निरूपित शक्ति के सान्निध्य में हैं। प्रभु बा की संगति ही अपने आप में पर्याप्त साधन है। आपके लिए और साधन जरूरी नहीं फिर भी आप संगति और साधन करते हैं तो आपका तो कहना ही क्या? मुझ में जो शक्ति साधन से आई है आपको तो वह सहज उपलब्ध है। ध्यान ही इसका मूल है। इस शक्तिरूपा प्रभु बा का वरदान आपको इस मार्ग में खूब उन्नत करेगा। यह कहकर वह लौट गए।(स्रोत : स्वामी शिवानंद)

आशुतोष यादव, इंदौर

हो गई मन की

यह बात हमें अनुग्रह मिलने के कुछ दिनों बाद की है। मैं सपरिवार उज्जैन में श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर दर्शनार्थ गया था। दर्शन के बाद मंदिर परिसर में कुछ देर बैठना हुआ। बैठे-बैठे मेरी आंखें बंद हो गईं और ध्यानावस्था हो ऐसी स्थिति बन गई। इसी अवस्था में मैंने देखा कि मेरी आंखों के सामने एक शिवलिंग है और उसके पीछे गुरुदेव प्रभु बा राजयोगी के रूप में बिराजमान हैं। 'ओम जय शिव ओंकारा' की आरती हो रही है। उस समय तक मैंने आश्रम में तथा सत्संग में सिर्फ 'आरती अवधूता' ही सुना था। उस समय कुछ भी समझ में नहीं आया और हम वापस इंदौर लौट आए।

कुछ दिनों बाद श्रावण में आश्रम द्वारा प्रभु बा के सान्निध्य में आयोजित पार्थेश्वर पूजा अनुष्ठान में उपस्थित होने का सौभाग्य मिला। पहले दिन हमने देखा कि एक विवाहित युगल को पूजा का अवसर मिला। क्योंकि हम इस

परंपरा में नए-नए ही जुड़े थे तो हम पति-पत्नी ने आपस में विचार-विमर्श किया कि ऐसी पूजा में बैठने के लिए क्या करना पड़ता है? हम नए थे इसलिए किसी से कहने या पूछने की बात भी जँच नहीं रही थी, झिझक भी थी।

अगले दिन हमारे आश्चर्य का पारावार न रहा जब हमें सूचना दी गई कि आज आपको पूजा में बैठना है। यह अत्यंत सौभाग्य का अवसर था। पूजन के बाद आरती हुई तो शिवलिंग के पार्श्व में प्रभु बा को बिराजमान देखकर महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, उज्जैन में हुई उस स्मृति का स्मरण हो आया। वह दृश्य मानस में पुनः साकार हो उठा। आरती भी वही जो वहां सुनी थी। इसके बाद जब जोड़े से गुरुदेव के दर्शन को गए तो गुरुदेव ने सिर पर थपकी लगाते हुए कहा-हो गई ना मन की? यह सुनकर मन गद्‌गद्‌ हो उठा। अंतर्यामी, सर्वज्ञ व साक्षात्‌ शिवशक्ति रुपी मेरे गुरुदेव प्रभु बा को नमन।

बात कहां तक पहुंची

सम्मतियां

1. श्री सुशीलचन्द्र सोनी, बांसवाड़ा

अक्टूबर 2023 की शिव गरिमा में 'एक आत्मीय आग्रह' के अंतर्गत स्वामी दादा की बात बहुत उचित है कि भावाभिव्यक्ति में भाषा का बंधन नहीं है। ईश्वर हर भाषा समझता है पर अनुशासन भी बहुत जरूरी है।

संपादकीय में कहा है कि ध्यान गहरा लगा या नहीं यह साधक का नहीं सद्गुरु का विषय है। पर कई साधक इस विचार में ही रहते हैं कि ध्यान सही लगता नहीं, क्या करूं? मुझे कुछ अनुभव होता नहीं, क्या करूं? गुरुदेव से पूछने में संकोच रहता है तथा पूछने की हिम्मत नहीं कर पाते। ऐसे सभी साधकों की शंकाओं का समाधान इसमें हो गया है। ऐसे साधकों का उत्साहवर्धन होगा। अंक बहुत बढ़िया लगा।

2. श्रीमती वेदिका वढ़ेर, रायपुर

सितंबर 2023 की शिव गरिमा में सद्गुरु व गणनायक की संग-संग छवियां बड़ी मनोहर व अप्रतिम हैं। शिवपूजन व नाम जप की महिमा विषयक गुरुदेव के निर्देश हमारी हृदय -मृदा में भक्तिभाव के बीजों का रोपण करते हैं।

संपादकीय में स्वामीजी ने भावों की गंगा प्रवाहित की है। साधक भाई-बहनों के अनुभवों ने मन-जलधि में सद्गुरु भक्ति की तरंगों को तरंगित करते हुए हर्ष का संचार कर दिया है। हर माह सद्गुरु के आशीर्वाद व परंपरा के साधन -मार्गदर्शन से परिपूर्ण पत्रिका एक अखंड दीप सी है। नमन व आभार।

सूचनाएं

1. शिव—गरिमा पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की मान्यता के अनुसार हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही संदेश के उपयोग हेतु हैं।

2. इस पत्रिका की अपने स्तर पर प्रिंट निकाल सकते हैं। विशेष रुप से केन्द्र संचालक एक कॉपी अवश्य केन्द्र पर रख सकते हैं।

3. इस पत्रिका में प्रकाशित फोटो का उपयोग कृपया अन्यत्र बिना अनुमति के न करें।

4. सभी केन्द्र संचालक महानुभावों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के पठन हेतु सभी साधकों को प्रेरित करें व उन्हें अपनी प्रतिक्रिया लिखने को भी कहें। आप स्वयं भी लिखने का अभ्यास बनावें।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा
संचालित काशी शिवपुरी आश्रम,
ईंटालीखेड़ा, तहसील—सलुम्बर,
जिला—सलुम्बर (राज.)
से प्रकाशित 'शिव—गरिमा'
ई—मासिकी, निः शुल्क।
संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद,
मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं
स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा),
ग्राफिक्सः प्रमोद सोनी,
स्वरः संजय शुक्ला

— संपर्क सूत्र —
आश्रम : 9929681423
स्वामी दादाः 9950502409
संपादक : 9414740814

www.prabhubaa.com

Prabhu Baa App